अध्याय 2

शिक्षा–अधिगम

प्रस्तावना

शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध अधिगम तथा शिक्षण दोनो से होता है। शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रियाएं दोनों एक साथ होती हैं। शिक्षण का उद्देष्य अधिगम प्रक्रिया का संचालन करना है। शिक्षक अध्यापन करता है और छात्र सीखते हैं। शिक्षण का मुख्य कार्य अधिगम की समुचित परिस्थितियों को उत्पन्न करना होता है। जिससे छात्र अनुभव द्वारा क्रियाएं करते हैं और अधिगम करते हुए नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है। शिक्षण की प्रभावशीलता के मूल्यांकन का मानदण्ड अधिगम होता है। शिक्षक जाने या अनजाने में अपने शिक्षण को अधिगम से संबंध स्थापित करता है और जब यह संबंध स्थापित हो जाता है तो छात्र अधिगम के द्वारा अपने पूर्व ज्ञान में नवीन ज्ञान की प्राप्ति करते हैं। प्रभावशाली शिक्षण के लिए शिक्षक को शिक्षण–अधिगम संबंध का ज्ञान होना आवश्यक है।

थॉमस एफ. ग्रीन ने अपनी पुस्तक में शिक्षण के अर्थ का विवेचन करते हुए बताया है कि जहाँ शिक्षण हो वहाँ यह आवश्यक नहीं कि अधिगम भी हो, अर्थात् अधिगम हो भी सकता है और नही भी। इनके विचार स्मिथ से भिन्न हैं। ग्रीन के अनुसार शिक्षण का उद्देश्य अधिगम होता हैं परंतु यह आवश्यक नहीं कि उसे प्राप्त कर ही ले। इन्होने इस कथन की पुष्टि हेतु कुछ तर्क दिये जैसे– डॉक्टर का इरादा मरीज को ठीक करना होता है परंतु यह आवष्यक नहीं कि सभी मरीज ठीक हो जाएं। इसी प्रकार शिक्षक का उद्देष्य होता है कि सभी छात्र शिक्षण अधिगम द्वारा

ज्ञान प्राप्त कर सीखें और परीक्षा में सफल हों किन्तु यह आवष्यक नहीं होता है कि *सभी विद्यार्थी परीक्षा में सफल होंगे।*

ग्रीन के अनुसार शिक्षण–अधिगम का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह कक्षा शिक्षण और शिक्षक तक ही सीमित नहीं है। जो भी अधिगम के लिए परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है जिससे छात्र कुछ क्रियाएं करते हुए अपने अनुभव के द्वारा ज्ञान की प्राप्ति करते हैं, वह शिक्षक की भूमिका का निर्वाह करता है इस प्रकार माता–पिता, भाई–बहन, मित्र एवं अन्य परिवार एवं समाज के सदस्य भी बालक को सिखाते हैं। प्रकृति भी बालकों को स्वअनुभव से सिखाती है।

इस प्रकार अनभवों एवं क्रियाओं से जो व्यवहार में परिवर्तन होते हैं उसे अधिगम कहते हैं। नवीन परिस्थितियों एवं क्रियाओं से जो अनुभव प्राप्त होते हैं उन्हे बालक के व्यवहार में परिवर्तन होता है और बालक नवीन ज्ञान को सृजन करता है।

ज्ञान के निर्माण का अर्थ एवं परिभाषाएँ

ज्ञान का निर्माण ज्ञान के ग्राहिता से पूर्णतया भिन्न होता है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी प्राप्त ज्ञान को अपने अनुभवों द्वारा परिवर्तन करते हुए उसका प्रयोग करता है। वह ज्ञान में कुछ नई चीजों को वाद–विवाद, खोज, खुले एवं स्वतंत्र अधिगम के द्वारा से संबंध स्थापित करता है। यहाँ अधिगम से अभिप्राय वैयक्ति ज्ञान के निर्माण से है। छात्र या अधिगमकर्ता अन्य छात्र अथवा अधिगमकर्ता से अन्तःक्रिया कर अथवा सहायता प्राप्त करके ज्ञान का निर्माण करता है।

ज्ञान के निर्माण में निर्माणकर्ता विषय–वस्तु सम्बन्धित निम्नलिखित व्यवहार को सम्मिलित कर सकता है–

1. अवधारणाओं का अपना अर्थ

2. विचारों में वस्तुनिष्ठता

3. अधिगम परिणामों में विभिन्नता

4. सृजनात्मक परिणाम

5. विचारों में लोचषीलता एवं स्वतंत्रता

6. छात्र अपने कार्यों की अन्य से तुलना

7. विनोदपूर्ण अधिगम

8. अन्तःकरण अभिप्रेरण की भूमिका

9. सामान्यतः गतिविधि आधारित शिक्षण

ज्ञान के अध्ययन को ज्ञान–मामांसा कहा जाता है। अपनी अनुभूतियों को जब बालक अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने लगता है और वस्तुओं को पहचानकर उसको उसके नाम से पुकारने लगता है तो हम कह सकते हैं कि बालक में समझ आ गई है। बालक अपने अनुभवों से ज्ञान तथा इसके अर्थों को उत्पन्न करता है। समझ के विकास का तात्पर्य विचारों, मनोवृत्तियों, कार्यों एवं सामाजिक मान्यताओं के अर्थ और प्रयोजन को समझना होता है। इस सिद्धांत के द्वारा यह दर्षाया जाता है कि कैसे शैक्षिक उपागमों को शिक्षण के पाठ्यक्रमों में रूपान्तरित किया जा सकता है तथा कैसे शिक्षा–शास्त्र को शिक्षक की प्रायोगिक रणनीतियों तथा क्रियाओं में विकसित किया जा सकता है।

प्रारंभ में बालक शब्दों का अर्थ तभी समझने हैं जब शब्दों का संबंध किसी वस्तु, विचार या अनुभव के साथ जोड़ा जाता है। जैसे– 'माँ' शब्द बालक के लिए आरंभ में ध्वनि के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता है, लेकिन जब 'माँ' शब्द का संबंध 'माता' से जुड़ जाता है, तब बालक 'माँ' का अर्थ समझता है। समझ का आधार वे उपयुक्त शैक्षिक अवसर या अनुभूतियाँ हैं, जिन्हें बालक शब्दों या वाक्यों में अभिव्यक्त करता है।

इसके अंतर्गत बालक सभी परिस्थितियों या उद्दीपनों के प्रति समान व्यवहार नहीं प्रकट करते हैं। जैसे– कोई वस्तु किसी बालक के लिए खेलने का साधन बन सकती है लेकिन दूसरे के लिए वह भय का कारण भी हो सकती है इसलिए बालक किसी भी उद्दीपन के प्रति कभी भी समान अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं करता।

अतः बालक को यह सिखाना चाहिए कि वह किसी वस्तु की निजी व्याख्या पर ही आधारित न रहे बल्कि उसे दूसरों की दी गई व्याख्या और निष्कर्षों को भी जानना चाहिए।

इस प्रकार समझ का आधार प्रत्यय होता है। जब तक बालक में प्रत्ययों का निर्माण नहीं होगा, उसकी समझ का विकास भी नहीं होगा इसलिए बालकों के प्रत्ययों का समझना होगा।